Printed Pages – 3

21063

B. A. (Third Year) Examination, 2021

(New Course)

हिन्दी साहित्य

(वैकल्पिक प्रश्न-पत्र) (अ)

Paper : Second

(हिन्दी, नाटक, निबन्ध तथा स्फुट गद्य विधाएँ एवं बुन्देली भाषा)

Time Allowed : Three hours

Maximum Marks : 60

***नोट** : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के अंक उनके सम्मुख दिये गये हैं।*

खण्ड-'अ'

(लघु उत्तरीय प्रश्न) **5×5=25**

1. पन्ना धाय का चरित्रांकन कीजिए।

अथवा

'वापसी' एकांकी का उद्देश्य लिखिए।

2. अन्धेर नगरी अथवा ध्रुवस्वामिनी का कथानक लिखिए।

अथवा

निबन्ध की परिभाषा दीजिए।

3. नाटक तथा एकांकी में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

आत्मकथा पर टिप्पणी लिखिए।

4. बुन्देली भाषा पर टिप्पणी दीजिए।

अथवा

सागर की बुन्देली का रूप बतलाइये।

5. मोहन राकेश अथवा महादेवी वर्मा अथवा ईसुरी के बारे में आप क्या जानते हैं?

खण्ड-'ब'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) **5×7=35**

6. नाखून क्यों बढ़ते हैं? पाठ का आशय समझाइये।

अथवा

'अन्धेर नगरी' प्रहसन आज भी प्रासंगिक है। कैसे?

अथवा

ध्रुवस्वामिनी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'उत्तिष्ठ भारत' पर टिप्पणी लिखिए।

7. चन्द्रगुप्त का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'अन्धेर नगरी' में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

करुणा निबन्ध का सारांश लिखिए।

अथवा

एकांकी 'वापसी' की समीक्षा कीजिए।

8. नाटक अथवा एकांकी की परिभाषा देते हुए उसके तत्वों की विवेचना कीजिए।

अथवा

रेखाचित्र अथवा संस्मरण के बारे में बतलाइये।

9. जगनिक की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

संतोष सिंह बुंदेला का जीवन परिचय देते हुए उनके काव्य वैशिष्ट्य का जिक्र भी कीजिए।

अथवा

बुन्देली भाषा की सीमा पर एक लेख लिखिए।

10. 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' पर अपने विचार दीजिए।

अथवा

मोहन राकेश की साहित्यिक कृतियों के बारे में एक लेख लिखिए।

अथवा

व्याख्या कीजिए—(कोई **एक**)

ओह माँ तुम तो बातें करने में बड़ी अच्छी हो। जब मैं बड़ा होकर बहुत सी जागीरें जीतूँगा माँ, तो मैं तुम्हारे लिए एक मंदिर बनवाऊँगा। देवी के स्थान पर तुमकों बिठाऊँगा और तुम्हारी पूजा करूँगा। तुम अपनी पूजा करने दोगी?

अथवा

जब से भई प्रीत की पीरा, सुखी नहीं जौ जीरा।

कूरा माटी भऔ फिरत है, इतै उतै मन हीरा।

कमती आ गई रकत माँस की, बहौ हगन से नीरा।

फूँकत जात विरह की आगी, सूकत जात सरीरा।

होई नीम में मानत 'ईसुर' ओइ नीम को कीरा।

अथवा

जहाँ न धर्म न बुद्धि नहि, नीति न सुजन समाज।

ते ऐसेहि आपु नसै, जेसे चौपट राज॥

अथवा

मेघ सकुल आकाश की तरह जिसका भविष्य घिरा हो उसकी बुद्धि को तो बिजली के समान चमकना चाहिए।